# महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का स्व. विचित्र कुमार सिन्हा सम्मान समारोह में उद्बोधन

स्थान :- भोपाल, दिनांक :- 14 फरवरी, 2013 समय :- शाम 6 बजे

स्वाधीनता संग्राम सेनानी, पत्रकार, साहित्यकार और कवि स्वर्गीय विचित्र कुमार सिन्हा की स्मृति में आयोजित सम्मान समारोह में उपस्थित होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। मैं आज सम्मानित होने वाले महानुभावों को बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

प्रकृति की इस बहुरंगी वाटिका में यूं तो हजारों लाखों फूल खिलते हैं परन्तु उनमें बिरले ही होते हैं जो सुंदरता और महक बिखेरकर अपनी स्मृति को चिर स्थायी बना जाते हैं। कलम के सिपाही और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री विचित्र कुमार सिन्हा (हरिशंकर सक्सेना) ऐसे ही अनोखे फूल थे जो काल के थपेड़े सहते सहते झर तो गये लेकिन अपनी लेखनी को अमर कर गये। वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तो थे ही साहित्यकार, राजनीतिज्ञ, कवि, लेखक, पत्रकार और समाज सेवी भी थे।

स्वर्गीय श्री विचित्र कुमार सिन्हा भोपाल के उस साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और पत्रकारीय परिवेश की उपज थे जिसके संस्कार स्वतंत्रता संग्रामी थे। एक साथ कई विधाओं के धनी होने के कारण ही वे भोपाल के उन बिरले माटी पुत्रों में से एक थे जिन्होंने अपने सभी रूपों को भरपूर प्रतिभा और लगन से जिया। वे एक पूरे वातावरण, युग और परिवेश के साक्षी ही नहीं उसके अंग भी थे। इसलिये वे महत्वपूर्ण भी थे और अनूठे भी।

बापू के अफ्रीका से लौटने के बाद स्वतंत्रता संग्राम ने तेजी पकड़ी थी। उनकी एक आवाज पर हर वर्ग,समाज और धर्म के लोग, यहां तक कि महिलाएं और बच्चे भी, स्वतंत्रता प्राप्ति की खातिर घरों से निकल पड़ते थे। बापू के शांतिपूर्ण आंदोलन में साहित्यकारों और पत्रकारों ने भी भरपूर योगदान दिया।

महात्मा गांधी की इस आवाज के साथ लाखों युवा उठ खड़े हुए। इनमें से एक स्वर्गीय विचित्र सिन्हा थे। 14 फरवरी 1924 को प्रदेश के गुना जिले में जन्मे विचित्र कुमार सिंहा ने मात्र पन्द्रह वर्ष की आयु में स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया। जो मातृभूमि की आजादी के प्रति उनकी भावना को प्रदर्शित करता है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वे चार बार जेल गए। सन् 1939 में वे मात्र पन्द्रह वर्ष की उम्र में झण्डा सत्याग्रह में कूद पड़े। स्वतंत्रता संग्रामी के रूप में ही उन्होंने कला स्नातक और साहित्य रत्न की उपाधियां हासिल की।

आजादी के पहले गणेश शंकर जी और माखनलाल जी ने बिना साधन-सुविधाओं के निडर होकर ओजपूर्ण और आक्रामक लेखनी के जरिए देश को सही रास्ता दिखाया था। इसी को स्वर्गीय श्री विचित्र सिन्हा जी ने आगे बढ़ाया।

स्वतंत्रता के पश्चात अपना जीवन कांग्रेस और खादी के प्रचार-प्रसार में लगाने वाले श्री सिन्हा जी स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी के सहयोगी रहे, जिन्होंने उन्हें छत्तीसगढ़ रियासतों के विलीनीकरण का दायित्व सौंपा।

कवि के रूप में भी स्वर्गीय श्री विचित्र कुमार सिन्हा जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से युवा पीढ़ी में राष्ट्रीयता और उत्साह उत्पन्न किया। गुना में आयोजित कवि सम्मेलन में जब उन्होंने सरस्वती वंदना नामक कविता सुनाई तो सभी श्रोताओं का हृदय आक्रोशित हो उठा।

मैं आज के नौजवान पत्रकारों से कहना चाहता हूं कि शहीद विद्यार्थी जी, दादा माखनलाल और स्व. विचित्र कुमार सिन्हा जैसी हस्तियों के चिन्तन में छिपे मूलमंत्र को समझें और छुआछूत को मिटाने, मजदूरों के हित संरक्षण, किसानों की भलाई, नारी के सम्मान के संरक्षण और साम्प्रदायिक सद्भावना के लिये पत्रकारिता को मिशन के रूप में इस्तेमाल करें। उन वीरों के मूलमंत्र आज के वातावरण में बहुत प्रासंगिक हो गए हैं।

मैं कहना चाहूंगा कि देश को आज की स्थिति से उबारने के लिए मीडियाकर्मी आजादी के पहले वाली पत्रकारिता का अनुसरण करें। पत्रकारों पर नई पीढ़ी के चरित्र निर्माण के साथ-साथ देश को आतंकवाद और अराजकता से मुक्ति दिलाने की जिम्मेदारी है। गांधी, नेहरू,सुभाष, भगत सिंह, चंद्रशेखर और अशफाकउल्ला के सपने अभी भी अधूरे हैं। जब तक हमारे देश में एक भी गरीब की आंखों में आंसू रहेंगे, तब तक आजादी के मायने पूरे नहीं होंगे।

देश पर मर मिटने वाले अमर शहीदों जैसा जज्बा आज भी लोगों में होना चाहिये नहीं तो आजादी को अक्षुण्य बनाये रखना मुश्किल हो जाएगा। हमें समाज में सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय के सिद्धान्त को प्रतिष्ठापित करना होगा।

मैं सम्मान समारोह के आयोजन के लिए स्वर्गीय विचित्र कुमार सिंहा के परिवार और इस से जुड़े सभी लोगों साधुवाद देना चाहता हूं जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की स्मृति को चिरस्थाई बनाये रखा है।

जय हिन्द।